# कला शिक्षण के उद्देश्य

(1) शारीरिक विकास — संरचनात्मक कार्यों से बालक का शारिरिक विकास होता है। बालक विकास के प्रत्येक स्तर पर संरचनात्मक क्रियाएँ करता है, जैसे प्रत्येक स्तर पर संरचनात्मक क्रियाएँ ~~कर~~ करता है, जैसे कागज मोड़ना, चिपकाना, बुनना, माडल बनाना, हथौड़ा चलाना आदि। ये क्रियाएँ उसके 'स्थान' सम्बंधी भौतिक ज्ञान को विकसित करती है, उसकी मांसपेशियों को सही ढंग से कार्य करने की योग्यता देती है, लयबद्ध गतियों के द्वारा सहयोगिता प्रदान करती है और यंत्रों तथा अन्य सामग्री को प्रभाव पूर्ण ढंग से प्रयोग करने की योग्यता देती हैं।

(2) मानसिक विकास — संरचनात्मक एवं क्रियात्मक अनुभवों को ग्रहण करते समय बालक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तथा क्रिया के संचालन हेतु बौद्धिक निर्णय लेना होता है। ऐसे

अक्सर सामूहिक एवं व्यक्तिगत सभी क्रियाओं में आते हैं। पेंटिंग तथा मॉडलिंग में भी यद्यपि निर्णय शीघ्रता से लेने होते हैं फिर भी यह कार्य ध्यानपूर्ण, विचारपूर्ण एवं पूर्ण निर्धारित कार्य है, जिससे मानसिक शक्तियों का विकास और पोषण होता है।

(3) सौंदर्यात्मक विकास — कला के द्वारा होने वाले शरीरिक एवं मानसिक विकास को मापा जा सकता है किन्तु सौंदर्यात्मक विकास का प्रत्यक्षीकरण कुछ कठिन है। कुछ व्यक्ति कलात्मक कार्यों के प्रति अपनी गहरी रुचि एवं पसन्द को बाहरी व्यवहार से प्रदर्शित नहीं करते वरन् ध्यानमग्न होकर शान्तिपूर्ण ढंग से उसे अनुभव करते हैं, जबकि कुछ व्यक्ति अपने अनुभवों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं तथा प्रशंसा एवं आनन्द का प्रदर्शन करते हैं इस कारण सौन्दर्यात्मक वृद्धि का मूल्यांकन वैयक्तिक है

और अत्यधिक कठिन हैं।

(4) स्वानुभव का विकास — व्यक्ति के 'स्वत्व' का पोषण विभिन्न अनुभवों से होता है। यह व्यक्तित्व में अंतर्दृष्टि, संवेदना, कल्पना और भावना के रूप में विकसित होता है, और सौंदर्यात्मक रूप प्राप्त करता है। इस विकास से बालक अपने उद्देश्य को समझता है और उसमें कार्य का ~~भाव~~ भार वहन करने की भावना, आत्मविश्वास, आलोचनात्मक योग्यता, निर्देशन और रचनात्मकता का विकास होता है।

(5) रचनात्मक कल्पना का विकास — बालक के विकास का सजीव पक्ष उसकी रचनात्मक कल्पना की परिपक्वता में है। कल्पना के कई रूप हो सकते हैं। यह रचनात्मक, खोजी, चंचल, चपल, चल-अचल, स्थिर-अस्थिर हो सकती है। कल्पना की शक्ति एक दैवीय वस्तु है जो बालक के लिए सर्वाधिक

मूल्यवान है।

(6) समस्या - समाधान की कुशलता का विकास -

समस्या - समाधान शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। ज्यों - ज्यों बालक अपनी समस्याओं का समाधान करता जाता है त्यों - त्यों उसकी बुद्धि का विकास होता रहता है। विभिन्न समस्याओं का समाधान करते - करते बालक के व्यवहार में जो परिवर्तन आता है वह यह प्रदर्शित करता है कि सीखने का कार्य संपन्न हुआ इच्छित मनोवृत्ति की स्थापना हुई है।

सीखने की प्रयोगात्मक पद्धति में बालक को सीखने के संपूर्ण अनुभव में भागीदारी करने का अवसर मिलता है, उसे सीखने की परिस्थितियों को चयन करने और उन्हें स्थापित करने की स्वीकृति मिलती है। उसमें छात्र सहायक सामग्री का चयन करता है और

अपनी योजना में उसे अनेक अनुभवों को संगठित एवं एकीकृत करने की चुनौती का सामना करना होता